2020-21 129

**Impact Factor-7.675 (SJIF)** **ISSN-2278-9308**

# B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

**Multidisciplinary International Research Journal**

**November-2020**

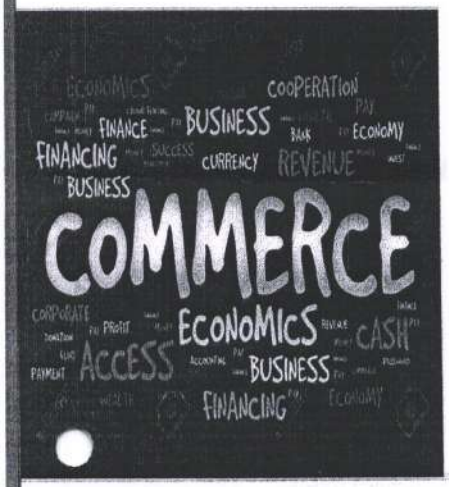


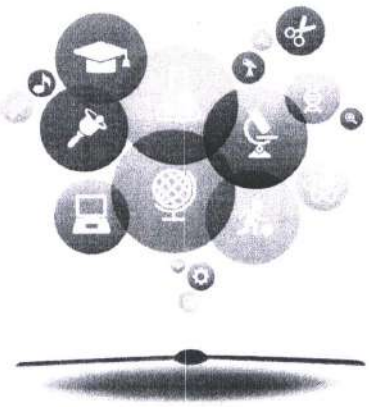

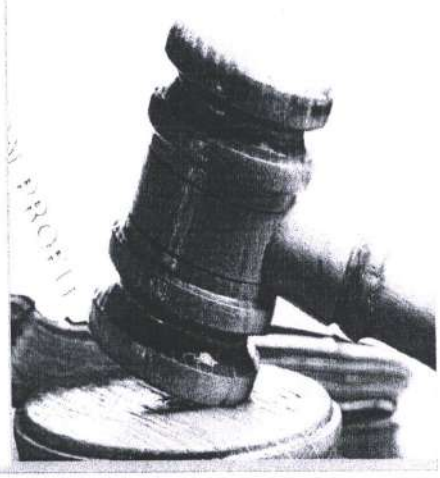

**Chief Editor**
Prof. Virag S. Gawande
**Director**
**Aadhar Social**
**Research & Development**
**Training Institute Amravati**

**Editor:**
Dr.Dinesh W.Nichit
**Principal**
**Sant Gadge Maharaj**
**Art's Comm,Sci Collage,**
**Walgaon.Dist. Amravati.**

**Executive Editor:**
Dr.Sanjay J. Kothari
**Head, Deptt. of Economics,**
**G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage**
**Chandur Bazar Dist. Amravati**

**This Journal is indexed in :**
- **Scientific Journal Impact Factor (SJIF)**
- **Cosmos Impact Factor (CIF)**
- **International Impact Factor Services (IIFS)**

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com*

Aadhar PUBLICATIONS

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ( (SJIF) -7.675, Issue NO, 254 (B)
ISSN : 2278-9308
November,2020

Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

# B.Aadhar

## Peer-Reviewed Indexed

***Multidisciplinary International Research Journal***

## November,2020

**ISSUE No – CCLIV (254-B)**

## Sciences, Social Sciences, Commerce, Education, Language & Law

**Prof. Virag.S.Gawande**
**Chief Editor :**
**Director**
**Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.**

**Dr.Dinesh W.Nichit**
**Editor :**
**Principal**
Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

**Aadhar International Publications**
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

**B.Aadhar** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ( (SJIF) –7.675, Issue NO, 254 (A )
ISSN : 2278-9308
November,2020

## INDEX


| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | शिवाजी—इस्लाम संबंध | प्रा. मंगेश वाहाणे | 1 |
| 2 | गोपीनाथराव मुंढे यांचे सामाजिक कार्य | प्रा.झरेकर रमेश सोनू | 5 |
| 3 | साने गुरूजींचे अनुवादित साहित्य | डॉ. जयश्री शास्त्री | 9 |
| 4 | भटक्या विमुक्तांच्या साहित्याची भाषा : विशेष संदर्भ 'पालावरचं जग' | प्रा. गणेश दिगंबर सावजी | 14 |
| 5 | धरण प्रभावित क्षेत्रातील विस्थापित कुटूंबाच्या समस्या | संजय नामदेवराव तोरवणे / प्राचार्य.डॉ.डी.एस.पाटील | 18 |
| 6 | स्त्री भ्रुणहत्या कारणे व उपाययोजना | सौ. किर्ती नितीन सांगळे | 22 |
| 7 | मानवाधिकार आणि आदिवासी समाज | प्रा.डॉ.उल्हास एन राठोड | 25 |
| 8 | राजे लखुजी जाधवराव कार्य व कर्तुत्व— एक समालोचन | रविंद्र शंकरराव फटींग | 30 |
| 9 | इक्कीसवीं सदी के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासोंमें चित्रित नारी | डॉ.प्रमोद परदेशी | 36 |
| 10 | भारतातील बौद्धीक संपदा अधिकाराचे महत्व व फायदे : एक दृष्टीक्षेप | संशोधक प्रा. सचिन ग. कर्णेवार / डॉ. प्रशांत म. पुराणिक | 42 |
| 11 | युवावर्गातील फास्ट फुडचे वाढते आकर्षण : आरोग्याची एक भीषण समस्या | प्रा. डॉ. सोनाली राजेश बन्सोड | 46 |
| 12 | जागतिकीकरण आणि शिक्षण यांच्यातील तुलनात्मक अभ्यास | प्रा. डॉ. मंजुषा समर्थ | 50 |
| 13 | बहामनी सुलतान व नरसिंगदेव राय संघर्षातून हिंदू राज्य स्थापनेचे प्रयत्न | डॉ. गजेन्द्र बी. ढवळे | 54 |
| 14 | भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार: एक वास्तव | डॉ. आर. जी. बांबोळे | 58 |
| 15 | मंदोदरीबाई पाटीलयांचे जागृति वृत्तपत्रातील स्त्री सुधारणेविषयक विचार . | प्रा. सचिन ज्ञानेश्वर मोरे | 63 |
| 16 | महाराष्ट्र आणि तेलंगणा राज्यातील अनुसूचित जमाती मधील 'आंध' समुदायाची बोलीभाषा | प्रा. गणेश बंडूजी माघाडे | 66 |
| 17 | कोव्हिड - १९ मधील प्लाझ्मा दान आणि लोकभ्रम | प्रा. कमलेश मानकर | 74 |
| 18 | राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे आरोग्यासंबंधी विचारांची कोरोना काळामध्ये गरज | प्रा. डॉ. अनुराधा रा. मुळे | 79 |

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ( (SJIF) -7.675, Issue NO, 254 (A )
ISSN : 2278-9308
November,2020

127

# भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार: एक वास्तव

डॉ. आर. जी. बांबोळे
सहयोगी प्राध्यापक भारतीय महाविद्यालय, मोर्शी

प्रस्तावना :

भारत की राजनीति संयुक्त संसदीय प्रतिनिधीय लोकतांत्रिक राज्य के ढॉचे में बनी हुई है, प्रधानमंत्री होता है, भारत देश में सरकार का प्रधानमंत्री होता है, और बहुमत के आधार पर चुनकर आता है और बहुपक्षीय तंत्र भारत के राजनीति में दिखाई पडता है। शासन एवं सत्ता सरकार के हाथ में होती है। संयुक्त वैधानिक बागडोर सरकार एवं संसद के दोनो सदनो में याने लोकसभा और राज्यसभा के हाथो में होती है। संविधान के अनुसार भारत एक प्रधान, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक राज्य है, जहाँ पर सरकार जनता के व्दारा चुनी जाती है। भारत में केंद्र सरकार राज्य सरकारों की तुलना में अधिक शक्तीशाली है, जो की ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली पर आधारित है।

हमारे भारत देश में सैकडो वर्षो पश्चात सन १९४७ में अंग्रेजी साम्राज्य से आजादी पाई गयी। आजादी के समय देश के समस्त नेताओ ने गांधीजी की रामराज्य के स्वप्न को साकार करने का संकल्प किया था, परन्तु वर्तमान स्थिति में भारतीय राजनीति में अपराधीकरण जिस गती से बढते जा रहा है, उस तीव्र गती से ही राजनीति में भ्रष्ट्राचार का फैलाव अधिक रुप से होते जा रहा है। देश में सभी और कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, भ्रष्ट्राचार, भाई—भतीजावाद, जातिवाद और सांप्रदायिकता का जहर दिनोंदिन फैल रहा है। एक सामान्य कर्मचारी से लेकर देश के उच्च पदो पर विराजमान हुए प्रधानमंत्री उच्च पदस्थ नेतांओ तक भ्रष्टाचार के सम्बन्धि आरोप समय—समय पर लगते रहे है।

भारत में भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में चर्चा और आन्दोलनों का एक प्रमुख विषय रहा है। आजादी के एक दशक बाद से ही भारत भ्रष्टाचार के दलदल मे कसने नजर आने लगा था और इस समय संसद में भारत के भ्रष्टाचार के विषय पर बहस भी हुई थी २१ दिसम्बर, १९६३ को भारत में भ्रष्टाचार के खात्मे पर संसद के सदनोंमे चर्चा हुई उस समय पर डॉ. राम मनोहर लोहिया जी ने भाषण दिया था वह आज भी प्रासंगिक है। राम मनोहर लोहिया कहते थे की, सिंहासन और व्यापार के बीच संबंध भारत में जितना दुषित, भ्रष्ट और बेईमान हो गया है उतना दुनिया के इतिहास में कही नही हुआ है। राम मनोहर लोहिया ने उस समय कहा थ, वे आज भी उन्होने कही हुई बात आज केवल वास्तविक स्थिती में लागू होती है।

भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार आज का सर्वाधिक प्रासंगिक विषय बन चुका है। यह एक ऐसा सत्य है जिसने भारतीय शासन प्रशासन एवं सम्पूर्ण समाज को गहराई से भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार के मामले से प्रभावित अधिकतम किया है। आश्चर्य इस बात का है की, लोगों के आसरा से शासन व्यवस्था के सिध्दांत पर आधरित भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला, आम जनता, इस वास्तविकता से भली—भाँति जानते हुए भी अभी भी भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार के समस्या के प्रति संवेदनशील नही बन सकी है। भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में सन १९४८ में महात्मा गांधी व्दारा की गई यह आलोचना अधिक महत्वपूर्ण है कि, भ्रष्टाचार जैसे मसलों के प्रति उदासीन रहना अपराध, महात्मा गांधी का उपर्युक्त कथन भारत के राजनीति में भ्रष्टाचार के प्रति उनके गम्भीर दृष्टिकोन एवं अन्तकरण की वेदना को अभिव्यक्त करता है। गांधीजी का कथन भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में विचारणीय तथ्य है। जो कि अनुभव से यह परिलक्षित होता है की

**B.Aadhar'** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 254 (A)
ISSN : 2278-9308
November,2020

**भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार :**

वर्तमान भारत के लिए भ्रष्टाचार से अधिक प्रासंगिक अन्य विषय की कल्पना शायद ही की जाए। समाज के हर स्तर पर और क्षेत्र को भ्रष्टाचार प्रभावित करते आ रहा है। भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में एडवर्ड गिब्बन का मत है कि, भ्रष्टाचार संवैधानिक स्वतन्त्रता का लक्षण है, ''यह कहना कठिण है कि, महान इतिहासकार गिब्बन का यह कहना व्यंगात्मक है या विश्लेषणात्मक। जो भी हो भ्रष्टाचार के लिए अधिकतम संवैधानिक स्वतन्त्रता न तो किसी देश में उपलब्ध है और न ही इसकी बहुत आशा की जाती है।'' १५ अगस्त, १९२७ के मध्यरात्री को स्वतन्त्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल मेहरु के अपने प्रसिध्द 'भाग्य से भेट' के बाद दिए गए अपने भाषण में डॉ. राधाकृष्णन ने सरकार और देश को इस उभरती समस्या के बारे में आग्रह किया था। और उन्होंने कहा था, जब तक हम इस देश की ख्याति को नष्ट करनेवाली सत्ता लोलुपता, मुनाफाखोरी एवं कालाबाजारी की प्रवृत्ति से मुक्ति नही पा लेते है। और उच्च पदो से भ्रष्टाचार को मिला नही देते तब हम इन में सुधार नही लग सकते। उन्होंने उच्च पदो पर भ्रष्टाचार का उल्लेख विशेष रुप से किया था। आजाद भारत को अपने अतीत से विरासत में दो चीजे मिली थी। महात्मा गांधी से उसे स्वच्छ राजनीति मिली एवं डॉ. बी. आर अम्बेडकर से भारतीय संविधान और ब्रिटिश राजने उसे साफ सुथरी नौकरशाही दी थी। गांधी ने जिस समय कॉंग्रेस की कमान संभाली थी। इस समय वह कमोवेश समितीत सदस्य संख्या वाले उस क्लब जैसे थी जहाँ सदस्यगण जमा होकर अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त कर आत्मसन्तुष्टि प्राप्त किया करते थे। लेकिन, इस विरासत को हम सम्भाल न सके यह दुर्भाग्यपूर्ण बात हमारे लिए रही है।

राजनैतिक भ्रष्टाचार पर किये गये शोध बताते है कि, यदि संचार माध्यम स्वतन्त्र और निष्पक्ष हो तो इससे सुशासन को बनवा मिलता है, जिससे आर्थिक विकास को गति मिलती है। भारत में १९५५ में अखबार के मालिकों के भ्रष्टाचार के मुद्दे संसद में उठते थे। आज मीडिया में भ्रष्टाचार इस सीमा तक बढ गया है कि, मीडिया के मालिक में काफी संख्या में संसद में बैठते दिखाई देते है। अर्थात भ्रष्ट मीडिया और भ्रष्ट राजनीतिक दल के राजनेता मिलकर काम कर रहे है। भ्रष्ट घोटालो मे मीडिया घरानों के नाम आते है। उनमें काम करनेवाले पत्रकारों के नाम भी आते है। कई पत्रकार भी करोडपति और अरबपति हो गये है। आजादी के बाद लगभग सभी बडे समाचार पत्र पूँजी पतियों के हाथों में गये। उनके अपने हित निश्चित हो सकते है। इसलिए आवाज उढती है कि मीडिया बाजार के चंगुल में है। इसलिए आवाज उठती है कि, निश्चित हो सकते है। बाजार का उद्देश्य यह है कि, अधिक से अधिक लाभ कमाना है। ऐसा वर्तमान स्थिति में देखने को मिलता है।

१) <u>जीप घोटाला प्रकरण</u> : जीप घोटाला कांड लन्दन में भारत के तत्कालीन उच्चायुक्त बी. के. कृष्णा मेनन, पं. जवाहरलाल नेहरु के अत्यन्त निकटस्थ से जुडा हुआ है जिसका सम्बन्ध इस समय भारतीय सेना के लिए अत्यावश्यक जीपों की से है। किसी संसद व्दारा निजी व्यावसायिक हितो की पूर्ति के लिए अपने पद और राजनीतिक शक्ति का दुरुपयोग करने से सम्बन्धित भ्रष्टाचार का यह प्रकरण पहला था जिसके विरुध्द स्पष्ट साक्ष प्राप्त हुए और प्रकरण के प्रकाश में आने के तुरन्त बाद नेहरु की सरकार ने त्वरित गति से इस घटना को संज्ञान मे ले लिया था।

२) <u>सेन्ट किट्स प्रकरण</u> : यह प्रकरण पूर्व प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह के पुत्र अजेय सिंह के नाम पर कैरोबियन व्दीप के छोटे से देश सेंट किट्स स्थित बॅक 'फर्स्ट कापोटरेशन लिमिटेड' मे फर्जी खाता खोलने में सम्बन्धित है। अजेयसिंह के नाम २ करोड १० लाख डॉलर जमा करने का आरोप लगाया गया था।

**B.Aadhar** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308
Impact Factor - ( (SJIF) -7.675, Issue NO, 254 (A) | November,2020

भ्रष्टाचारने उग्र रुप धारण कर लिया है। कमजोरी दिखाई पडती है। जहॉ भ्रष्ट लोग कम होते है, वहॉ भ्रष्टाचार व्यक्तिगत समस्या होती है और भ्रष्ट तत्वों से व्यक्तिगत स्तर पर निपटा जा सकता है, लेकिन समाज में भ्रष्टाचार चारों तरफ फैला हो, जैसा की आज हमारे भारत देश में है, तो पुरी राजनैतिक व्यवस्था के सुधार करने की आवश्यकता होती है।

सुझाव :

१) भारतीय राजनीति में होनेवाले भ्रष्टाचार को रोकने लिए कठोर दंड व्यवस्था की जानी चाहिए। जब तक इस अपराध के लिए कडा दंड नही दिया जाएगा, तब तक भ्रष्टाचार की बिमारी दीमक की तर पुरे देश को खा जाएगी।

२) समाज के सभी लोगों को इमानदारी से कार्य करना होगा ताकि, लोगों ईमानदारी विकसित होगी और आनेवाली पीढी के सामने नैतिकता से तथा सुआचरण करना होगा।

३) भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए लोगों का सहयोग और लोकपाल पद की गरिमा और बढाई जाए।

४) भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए देश मे जमा होनेवाले सम्पति की हर साल गणना हो। करोड से ज्यादा सम्पतिधारी लोगों की सूची बनाकर लोगों के सामने उनकी सम्पति कितनी है वे प्रदर्शित करे।

५) राजनीतिक दल बदल कर दुसरे दलमें जो नेता शामील होते है, उनकी राजनीति करने का बिल्कुल अवसर नही देना होगा।

६) भ्रष्टाचार पर अंकुश पाने के लिए भ्रष्टाचार विरोधी नागरिक संगठन मजबूत करना चाहिए।

७) भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए भ्रष्टाचार निरोधक कानून याने भारतीय दण्ड संहिता, भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम तथा बेनामी लेनदेन अधिनियम इन नियमों का कठोर रुप से अमल करना चाहिए।

८) भारत के सभी राजनीतिक दलों के नेताओं कार्यकर्ताओ के भीतर लोकतांत्रिक प्रकिया को मजबूत बनाने के लिए कार्यशालाओ का आयोजन करना चाहिए, ताकि दलीय व्यवस्था में समाज के प्रति, देश के प्रति, लोगों के कल्याण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना निर्माण की जाए।

संदर्भग्रंथ सूची :

१. अग्रवाल, बिहारी प्रसाद, ''भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, २००५ पृ.क्र.२५

२. अग्रवाल, यु. सी., ''प्रशासनिक भ्रष्टाचार'' (एक लेख) पॉलिटिक्स इंडिया नवम्बर, १९९८ पृ.क्र.२५

३. भार्गव, जी. एस., ''पॉलिटिक्स करप्शन इन इंडिया'' पाप्युलर बुक सर्व्हिस, नई दिल्ली, पृ.क्र.७९

४. कन्साइज, ऑक्सफोर्ड — शब्दकोष, पृ.क्र.४५

५. माहेश्वरी, एम. आर, ''भ्रष्टाचार समाज का कॅन्सर'' (लेख) पॉलिटिक्स इंडिया, पृ.क्र.१६

६. वही पृ.क्र.२६

७. Parlimentary Democracy in India, Related issues, ''भारतीय राजनिती में भ्रष्टाचार'' (लेख) पृ.क्र.५२,५३

८. www.Pravakta.com

९. www.m.wikypidia.org

१०. www.aajtakwaaz.com